महानिदेशक ईसीमोड का सन्देश

अन्तराष्ट्रीय जैव विविधतता दिवस, 2018

'जैविक विविधता महासन्धिको २५ औं वर्ष'

यह वर्ष ''जैवविविधता सन्धि (सी.बी.डी.)'' की 25 वीं वर्षगॉठ को इंगित करता है तथा इस वर्ष का ''अन्तराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस (आई.बी.डी); ''जैवविविधता गतिविधियां – 25 वर्षीय समारोह'' पर केन्द्रित है।

विगत 25 वर्षों में वैश्विक पर्यावरण नियमन तंत्रों जैसे कि सी.बी.डी. द्वारा हिन्दूकुश हिमालय के (एच.के.एच) राष्ट्रों में जैव विविधता को कायम रखने में महत्वपूर्ण मदद मिली है। यद्यपि ''जैवविविधता सन्धि'' के राष्ट्रीय एवं वैश्विक लक्ष्यों को पूरा करना एक वृहद चुनौती है। अतः यह ''अन्तराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस'' हमारे लिए एक अवसर है जिसमें कि हम अपनी मुख्य उपलब्धियों को गिना सकते हैं तथा क्या करना रह गया यह भी परिलक्षित कर सकते हैं।

हिन्दूकुश हिमालय लगभग 24 करोड़ (240 मिलीयन) लोगों का निवास स्थान है तथा इसकी नदियां विश्व की एक चौथाई आबादी (190 करोड़) की जलापूर्ति करती है। इसमें हिमालय, इण्डो–बर्मा, दक्षिण पूर्वी चीन एवं मध्य एशिया के पर्वत सम्मिलित हैं। ये परम्परागत रूप से जुड़े हुए सीमापारीय जैव विविधता हॉट–स्पॉट हैं, जो आजीविका में सहायक हैं तथा तीन सौ करोड़ लोगों को खाद्य सुरक्षा भी प्रदान करते हैं। जिसमें की विश्व के किचिंत सबसे गरीब व वंचित लोग भी शामिल हैं।

हिन्दूकुश हिमालय की जैविक भिन्नता को सम्मान देना एवं यहां के निवासियों पर केन्द्रित होकर कार्य करना ईसीमोड के सभी कार्यकलापों की विशेषता है। यह प्रत्यक्ष रूप से हमारे सीमापारीय क्षेत्रीय कार्यक्रमों में नजर आता है। विभिन्न सहयोगियों के माध्यम से इन पहलों के तहत आकड़ों की कमी को भरने का प्रयास किया गया, दीर्घकालिक पर्यावरण एवं सामाजिक–पारिस्थितिकीय अनुश्रवण की स्थापना, जैव विविधता संरक्षण मॉडलों का परीक्षण, मानव एवं संस्थागत क्षमताओं का विकास, राष्ट्रीय जैव विविधता संरक्षण रणनीतियों को प्रभावित करना तथा राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों में साक्ष्यों के माध्यम से समावेशी परिवर्तन जैसे कार्यो को प्रभावी किया गया है। उदाहरणार्थ, कंचनजंगा भूक्षेत्र संरक्षण एवम् विकास पहल (के.एल.सी.डी.आई.) द्वारा के.एल. जैव विविधता डाटा बेस में सहयोग कर एक अद्यतन ग्रन्थसूची के साथ ही साथ पक्षी (618 प्रजातियां), तितली (600 प्रजातियां), और पुष्प चिन्हॉकन सूची (5198 प्रजातियां) को

अतिरिक्त रूप से जोड़ा गया है। इसके द्वारा वनों के पातन और इसको कम उत्सर्जन की पहल (आर.ई. डी.डी.) से जोड़ते हुए रेड पांडा को एक प्रमुख प्रजाति के रूप में संरक्षित करने में मदद मिली है।

सुदूर पूर्वी हिमालयी भूक्षेत्र पहल (हाई–लाइफ) भी समान रूप से क्रियाशील हैं। इसके द्वारा विषयगत मानचित्रों और सुविधाओं को विकसित किया गया है जो जैव विविधता हॉटस्पॉट, पर्यावरणीय क्षेत्र, संरक्षित क्षेत्र, बर्ड वाचिंग एवं कुछ मुख्य प्रजातियों जैसे कि टॉकिन, गिब्बन और मिथुन के निवास आदि का अनुश्रवण एवं प्रबन्धन हेतु कार्य हुए हैं। ये प्रजातियां सम्पूर्ण भूक्षेत्र में सामान्यतया पायी जाती हैं और अपने आर्थिक, जातीय, सांस्कृतिक व कृषि आनुवांशिकी गुणों के कारण अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

कैलाश पवित्र भूक्षेत्र एवं विकास पहल (के.एस.एल.सी.डी.आई.) तथा आर.ई.डी.डी. पहल के माध्यम से लोगों के पारम्परिक ज्ञान पर केन्द्रित तथा आधुनिक भू–स्थानिक प्रविधियों को स्थानीय संरक्षण अनुभवों से जोड़ते हुए जैव विविधता रजिस्टर और जैव सांस्कृतिक व्यवस्था (कल्चरल प्रोटोकाल) को तैयार करने में योगदान मिला है। ये संरक्षण एवं विकास कार्यो में मानव केन्द्रित रणनीतियों, योजनाओं व क्रियान्वयन प्रक्रियाओं को सशक्त करते हैं। इसी प्रकार के.एस.एल.सी.डी.आई. ने वन्यजीव तस्करी से निपटने के लिए मानव वन्यजीव हॉटस्पॉट का मानचित्रण व योजना तैयार कर क्षमता विकास में सहयोग किया है। सांस्कृतिक सेवाओं की महत्ता पर जोर देते हुए हिन्दूकुश–काराकोरम–पामिर भूक्षेत्र में सरंक्षण को बढ़ावा देने हेतु पारम्परिक ज्ञान के प्रति समुदायों को प्रोत्साहित कर ध्यान आकर्षित किया गया है। समस्त सीमापरीय भूक्षेत्रों में, जहॉ भी ईसीमोड कार्यरत है, वहॉ की जैवविविधता ऑकड़े वेब पोर्टल पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हैं। हमारे आकड़े एवं क्षेत्रीय सीख का उपयोग वैश्विक संरक्षण रणनीतियों को आधार देने हेतु शैक्षिक एवं वैश्विक मंचों में किया जाता है। जैसे कि वैश्विक संरक्षण रणनीतियों को स्वरूप देने हेतु जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी सेवाओं का अंतरसरकारी मंच (आई.पी.बी.ई.एस.) एवं वैश्विक जैव विविधता सूचना सुविधा (जी.बी.आई.एफ.)।

हालांकि मानव–वन्यजीव संघर्ष, अवांछित विदेशीय प्रजातियॉ, वनाग्नि तथा वन्य जीव तस्करी के प्रबन्धन में चुनौतियां अभी बनी हैं। ऐसी समस्याओं का समाधान 'भूक्षेत्र क्रियाविधि' (लैण्ड स्केप अप्रोच) में निहित है जो संस्थानिक क्षमताओं और प्रतिबद्धताओं को सुदृढ़ करने की मांग करता है। क्या संस्थाऐं पर्याप्त रूप से सक्षम हैं, इसका निर्धारण जैव विविधता संरक्षण 2011–2020 की रणनीतिक योजना की सफलता पर निर्भर करेगा। आने वाले वर्षों में हमें, जैव विविधता अनुश्रवण को और अधिक सक्षम करने, धरातलीय सीखों से नवाचार करने तथा कृषि, वानिकी, ऊर्जा, जल, बुनियादी ढॉचे एवं सेवा को भूक्षेत्र और नदी क्षेत्र कार्यसूची में एकीकृत करने की आवश्यकता होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में भू–क्षरण से निपटने के लिए तथा सतत संरक्षण एवं विकास में भागीदारी हेतु हमें समाज को पुरस्कृत करने की आवश्यकता है।

''अन्तराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस'' 2018 के अवसर पर यह स्पष्ट है कि पिछले 25 वर्षों में हमने बहुत कुछ अर्जित किया है, तथापि बहुत से कार्य अभी किये जाने शेष हैं। इस दिन मैं सभी पर्वतीय

समुदायों और हितधारकों को उनके द्वारा हिन्दूकुश हिमालय क्षेत्र में जैव विविधता के संरक्षण हेतु किये गये कार्यो एवं जैव विविधतता को बचाए रखने हेतु संकल्पों की निरन्तरता कायम रखने हेतु शुभकामना देता हूँ इन्हीं संकल्पों से हमारे लोगों व हमारी पृथ्वी का भला होगा।